Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 17 - मैं और मैं

कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. 'मैं और मैं पाठ के लेखक कौन हैं?

(क) जयशंकर प्रसाद

(ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

(घ) रामचंद्र शुक्ल

उत्तर: (ग)

प्रश्न 2. लेखक के मित्र श्री सिंहल अपनी गाड़ी क्यों बेचना चाहते थे?

(क) कर्जा चुकाने के लिए।

(ख) मौज-शौक के लिए।

(ग) पैसे कमाने के लिए

(घ) नया व्यापार आरंभ करने के लिए

उत्तर: (घ)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक के मित्र अपनी गाड़ियाँ कितने में बेचने को राजी हो गए?

उत्तर: लेखक के मित्र अपनी गाड़ियाँ छः-छः हजार रुपये में बेचने को राजी हो गए।

प्रश्न 2. लेखक की दृष्टि में कौशल जी अद्भुत क्यों थे?

उत्तर: लेखक की दृष्टि में कौशल जी अद्भुत थे , क्योंकि अपने जीवन में अनेक बार असफल होने के बाद भी वह निराश नहीं हुए थे।

प्रश्न 3. लेखक के लिए कौशल जी की अपराजित वृत्ति का रहस्य क्या था?

उत्तर: कौशल जी की अपराजित वृत्ति का रहस्य यह था कि वह कभी निराश नहीं होते थे तथा नई ऊर्जा के साथ नया काम शुरू कर देते थे।

प्रश्न 4. कौशल जी का प्रेस क्यों फेल हो गया?

उत्तर: कौशल जी का साझीदार चालाक था। वह कर्जा प्रेस के नाम तथा आमदनी अपने नाम लिखता रहा। परिणामस्वरूप प्रेस फेल हो गया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. पाँचों आदमी क्यों रो रहे थे?

उत्तर: पांचों आदमी रोजगार के लिए घर से निकले थे। रास्ते में एक मंदिर में पड़कर सो गए। सोने से पहले गिनती की, तो वे पाँच ही थे , किन्तु सवेरे जागने के बाद गिनने पर वे चार ही रह गए थे। प्रत्येक बार गिनने पर उनकी संख्या चार ही थी। अपने एक साथी के खोने के कारण वे रो रहे थे।

प्रश्न 2. लेखक ने किन लोगों को पशु कहा?

उत्तर: लेखक ने उन लोगों को पशु कहा है , जो सोचते-विचारते नहीं हैं। पहले सोचे फिर कोई काम करे , उसको मनुष्य कहते हैं , किन्तु बिना सोचे ही किसी भी काम को करने लगे , किसी भी दिशा में चलने लगे, उसे पशु कहते हैं। पशु होने के लिए पूँछ और सींगों का होना जरूरी नहीं है।

प्रश्न 3. शेखशादी ने अपने बेटे को घर पर सोते रहने के लिए क्यों कहा?

उत्तर: शेखसादी अपने बेटे के साथ सुबह की नमाज पढकर लौट रहे थे। उनके बेटे ने कहा कि रास्ते के दोनों तरफ वाले घरों में अभी भी बहुत से लोग सो रहे हैं और नमाज पढने नहीं गये। उन्होंने अपने बेटे को घर पर सोते रहने को कहा, क्योंकि यदि वह सोता रहता, तो दूसरों की बुराई करने के पाप से बचा रहता।

प्रश्न 4. कौशल जी की पुस्तकों का प्रकाशन क्यों बंद हो गया?

उत्तर: कौशल जी ने पुस्तकों को प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया। उनकी पुस्तकें खूब बिकती थीं। देश स्वतंत्र हुआ। कौशल जी किसी स्थान की यात्रा पर जा रहे थे। रास्ते में एक जाति के लोगों ने उनको उतार लिया। वह अनेक दिनों तक बन्दी रहे और अनेक स्थानों पर भटकते रहे। देखभाल के अभाव में उनका प्रकाशन-कार्य बन्द हो गया।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. पाँचों भँगेड़ियों वाली कथा के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर: पांचों भँगेड़ी अपनी घरवालियों से परेशान होकर रोजगार की तलाश में घर से निकले। रास्ते में एक मंदिर में सो गए। सवेरे गिना तो वे चार ही रह गए थे। गिनने वाला अपने को नहीं गिनता था।

इस कथा के माध्यम से लेखक बताना चाहता है कि संसार में लोग ऐसा ही करते हैं। वे अपने दोष तथा कमियाँ नहीं देखते। दूसरों की कमियाँ देखते हैं। उनकी बुराई करते हैं। वे दूसरों को सुधारना चाहते हैं। अपनी बुराइयों के बारे में वे जानते ही नहीं हैं , अत: उनमें सुधार के बारे में भी वे नहीं सोचते।

लेखक संदेश देना चाहता है कि मनुष्य स्वयं को ही बदल सकता है। वह दूसरों को नहीं बदल सकता। अपने अन्दर उसे सुधार करना चाहिए। दूसरों के दोष देखने, उनसे घृणा करने तथा अपने को दोष रहित समझने से उसमें अहंकार का भाव जागता है। इससे उसके मन में घृणा का भाव जन्म लेता है। मनुष्य को स्वयं को बदलना चाहिए। उसको ऐसे काम करने चाहिए कि दूसरे उससे प्रेरणा लें। उसका अधिकार अपने में परिवर्तन लाने का ही है। दूसरों के बदलने का उसको हक नहीं है।

प्रश्न 2. शेखशादी वाली कथा से लेखक क्या समझना चाहता है?

उत्तर: शेखसादी वाली कथा से लेखक समझाना चाहते हैं कि शेखशादी एक महान् कवि तथा विचारक थे। वह सवेरे उठकर नमाज पढ़ने गए। उनका पुत्र भी साथ था। लौटते समय रास्ते के घरों में कुछ लोगों को सोता हुआ देखकर उसने अपने पिता से कहा- 'अब्बा, ये लोग बड़े आलसी हैं। सवेरे नमाज पढ़ने नहीं गए। इनको पाप लगेगा। ' शेखशादी ने कहा-"यह अच्छा होता तू भी सोता रहता। " कारण पूछने पर उन्होंने कहा-"तब तू दूसरों को न देखता और उनकी बुराई करने के पाप से बचा रहता।"

इस कहानी का उल्लेख करके लेखक बताना चाहता है कि मनुष्य को अपनी भूलों की ओर ही देखना चाहिए तथा उनमें सुधार करना चाहिए। दूसरों के अवगुणों पर ध्यान देने से उसमें अहंकार पैदा होता है तथा वह घृणा की भावना से भर उठता है। मनुष्य को केवल अपने अन्दर ही सुधार करना चाहिए। उसको अच्छे काम करने चाहिए, जिनको देखकर दूसरों अहंकार को घृणा का पिता कहते हैं, अत: मनुष्य को अहंकारी नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 3. कौशल जी ने कौन-कौन से व्यापार किए?

उत्तर: लेखक के एक मित्र कौशल जी थे। कक्षा नौ तक पढ़े फिर एक छोटा-सा प्रेस खोल दिया। साझीदार की बेईमानी के कारण प्रेस बन्द हो गया। फिर उन्होंने अपने पिता की पूँजी लगाकर बर्तनों का कारखाना खोल लिया। पत्नी बीमार हुई , तो उसको इरविन अस्पताल में दाखिल कराया। मजदूरों की

THE HINDI PAGE जानें कुछ नया www.thehindipage.com

लापरवाही के कारण कारखाना बन्द हो गया। उसमें भी घाटा उठाना पड़ा। उसके बाद आपने पंसारी की थोक की दुकान की। फिर रुपया बरसने लगा , पर उसमें भी लाभ नहीं हुआ और पत्नी के जेबर बेचने पड़े।

कौशल जी खाली नहीं बैठ सकते थे। घर से दूर जाकर होटल खोल लिया। चला , चमका, फिर ठप हो गया। अब क्या करें? फिर वह अपने एक रिश्तेदार की सोडा वाटर की फैक्टरी में बैठने लगे। इसको छोड़कर एक बीमा कम्पनी में चले गए। खूब चमके। बीमा कम्पनी के डायरेक्टरों में कुछ झमेला मचा , तो उसे छोड़कर उन्होंने शर्बत की एक दुकान खोल ली और एक अखबार निकाला। ये दोनों काम भी चले , लेकिन टिक न सके।

इसके पश्चात् आप एक कम्पनी के मैनेजर डायरेक्टर बन गए। कुछ दिन खूब सफलता मिली , परन्तु कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं कि कम्पनी में ताला पड़ गया। अब उन्होंने पुस्तक प्रकाशन का काम आरम्भ किया। पुस्तकें छप रही थीं , बिक भी रही थीं। तभी देश स्वतंत्र हुआ। वे एक यात्रा पर गए थे। एक जाति के लोगों ने उनको उतार लिया। बहुत दिनों तक बन्दी रहे। जाने कहाँ-कहाँ भटकते रहे। बहुत दिनों बाद वह एक पत्रकार के रूप में प्रकट हुए। अब वह शांति , प्रतिष्ठा और सम्मान की व्यवस्थित जिन्दगी बिता रहे हैं।

प्रश्न 4. हमारा हमारे प्रति क्या अधिकार है?

उत्तर: हमारा हमारे प्रति यह अधिकार है कि यदि मैं हार जाऊँ, तो हार कर भागू नहीं। यदि मैं थक जाऊँ , तो थक कर बैठा न रहूँ। यदि मैं गिर जाऊँ , तो गिरा ही न रहूँ उठकर चलें भी। यदि मैं अपने जीवन में और भूल करूं, तो भूल और भ्रम में ही न फंसा रहूँ। शीघ्र ही सही रास्ता तलाश कर उस पर चलने लगूं। धरना, थकना, गिरना तथा भूल करना एक मनुष्य के नाते स्वाभाविक बातें हैं तथा ऐसा होना असंभव नहीं है।

हमारा यह अधिकार है कि हम अपनी कमियों को देखें और उनमें सुधार करें। हम कभी निराश न हों और अपना काम करते रहें। एक कामे रुकने पर नया काम आरम्भ करू, नया स्टार्ट करूं, क्योंकि रुक जाना ही मृत्यु है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 17 - मैं और मैं

कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'

लेखक परिचय

श्री मिश्र जी का जन्म सन् 1906 में सहारनपुर जिले के देवबंद ग्राम में हुआ था राजनीतिक और सामजिक कार्यों में इनकी गहरी रुचि रही है।

स्वतंत्रता - आंदोलन के संदर्भ में इन्होंने कई बाद जेल की यात्रा भी की इनका मुख्य कार्य क्षेत्र पत्रकारिता है यों तो ये 'ज्ञानोदय' के संपादक भी रहे, किंतु इनकी साहित्य साधना विशेषतः 'नया जीवन' मासिक के संपादन-प्रकाशन के रूप में व्यक्त हुई है। ललित निबंधों के क्षेत्र में भी इन्होंने अनवरत योग दिया है।

इनके प्रमुख निबंध संग्रह - जिंदगी मुस्करायी , माटी हो गयी सोना , बाजे पायलिया के घुघरू और दीप जले शंख बजे । आकाश के तारे : धरती के फूल इनका लघु कथा संग्रह है । पत्रकार होने के नाते इन्होंने कई रिपोर्ताज भी लिखे। इनके रिपोर्ताज 'क्षण बोले कण मुस्काये' शीर्षक कृति में संकलित है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत निबंध प्रभाकर जी की 'जिए तो ऐसे जिए' शीर्षक कृति से लिया गया है। इसमें लेखक ने यह प्रतिपादित किया है कि प्रायः मनुष्य दूसरों के विषय में सोच-समझकर दुखी-सुखी होता रहता है। उसका प्राथमिक कर्त्तव्य यह है कि वह अपने विषय में सोचे , अपने कर्त्तव्य का पालन करे और निरंतर कर्मरत बना रहे। कर्त्तव्य करने के साथ-साथ उसे अहंकार का बोझ नहीं लादना चाहिए। अहंकार घृणा का पिता है और घृणा जीवन की संपूर्ण ऊँचाइयों की दुश्मन है। अतः घृणा से बचना चाहिए।

लेखक ने जो दूसरा संदेश दिया है, वह यह है कि मनुष्य को जीवन के प्रति निष्ठा रखते हुए संघर्षों से घबराना नहीं चाहिए , निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि निराशा कर्म की गति रोक देती है तथा नया और ताजा अनुभव नहीं करने देती है।

मूल पाठ

जब देखो गुमसुम, जब देखा गुमसुम! अरे भाई, तुम्हें क्या साँप सूँघ गया है कि सुबह के सुहावने समय में यों चुपचाप बैठे हो ? तुमसे अच्छे तो देवीकुंड के कछुवे ही हैं कि तैरते नजर तो आ रहे हैं। उठो , दो-चार किलकारियाँ भरो और अँगीठी के पेट में गोला डालो , जिससे अपना भी पेट गरमाए। ओ हो , तुम कहाँ से आ टपके इस समय ? कोई कितने ही गंभीर मूड में हो, विचारों की कितनी ही गहराइयों में उतर रहा हो, तुम्हारी आदत है बीच में आ कूदना और फैलाने लगना लन्तरानियों के लच्छे-एक के बाद एक। यह सच है कि यह बहुत बुरी आदत है।

तो हम लन्तरानियों के लच्छे फैलाते हैं और तुम गंभीर मूड में रहते हो। सचाई यह है भाई जान कि जमाना बहुत खराब है। जिस गधे को नमक दो , वही कहता है कि मेरी आँख फोड़ दी। हम जा रहे थे अपने काम, तुम्हें दूर से देखा सुस्त, रास्ता काटकर इधर आए कि देखें तो माजरा क्या है और मामला कुछ गड़बड़ हो, तो कुछ मदद करें, पर तुम्हारे तेवर कुछ ऐसे बदले हुए हैं कि जैसे हम सुबह-सुबह चार रुपये उधार माँगने आ गए हों और पहले इसी तरह हाथ उधार उठाए रुपये हमने अभी तक वापस न किए हों। बहुत अच्छे रहे।

ना, ना यह बात नहीं है। तुम्हारा आना सर आँखों पर, तुम भी यह क्या बात कह रहे हो, पर बात यह है कि मैं इस समय बहुत गहरे चिंतन में था और लो बताऊँ तुम्हें गहरे चिंतन में क्या था , मैं अपने आप में खोया हुआ हूँ आज।

THE HINDI PAGE
जागो कुछ बोलो
www.thehindipage.com

वाह भाई वाह, क्या कहने! लो, फिर बताऊँ तुम्हें मैं भी एक बात कि आज तुमने ऐसी दूर की हॉकी कि अब तक के सब छौंक मात हो गए। हाँ जी , तो आज तुम अपने आप में खोये हुए हो। मियाँ, खोये हुए हो, तो डौंडी पिटवाओ या पुलिस में रिपोर्ट लिखाओ । खड़े-खड़े क्या देख रहे हो भैंगे बबूल-से।

तुम तो अजीब आदमी हो कि मैं कह रहा हूँ सन्त सुभाव एक गहरी बात और तुम उड़ा रहे हो , गुटप्पे, पर बात यह है कि पढ़ाई के लिए एक पैसा कभी किसी मास्टर को तुमने दिया नहीं, अक्ल आए भी तो कहाँ से। लो, फिर मैं आज तुम्हें तुम्हारे ही जैसों की एक कहानी सुनाता हूँ। उसे सुनकर तुम समझोगे कि कैसे आदमी अपने आप में खोया जाता है।

पाँच आदमी आपस में गहरे दोस्त थे। करने-धरने को कुछ नहीं , खाने को दोनों समय रोटी और पीने को भंग चाहिए-पाँचों पक्के भंगड़ी-पीये और धुत्त पड़े रहे। एक दिन कहीं मंदिर में बैठे घोट रहे थे कि उन पाँचों की स्त्रियाँ इकट्ठी होकर जा पहुँची और लगी दिल के गुब्बार निकालने । जो दस-पाँच आदमी वहाँ और थे, उन्होंने भी इन स्त्रियों की बात का समर्थन किया बड़ी बेइज्जती हुई और पाँचों ने कहीं परदेश में जाकर रोजगार करने का फैसला लिया।

पाँचों चल पड़े। चलते-चलते आपस में सलाह की कि , भाई होशियारी से चलियो, कहीं रास्ते में ऐसा न हो कि साँझ हो जाए जरा गहरी और कोई खोया जाये-लौटकर उसकी घरवाली को क्या जवाब देंगे। फिर कुछ दूर गए.

रात हुई. एक मंदिर में पड़ कर सो गए। सुबह उठते ही तब पाया कि भाई , पहले गिन लो, सब चौकस भी हैं।

उनमें से एक ने सबको गिना : एक, दो, तीन, चार। फिर गिना: एक, दो, तीन, चार । जोर से चिल्लाकर कहा - अरे, हम तो घर से पाँच चले थे, ये तो रात भर में ही चार रह गए। दूसरे ने दुबारा सबको गिना , पर वे ही चार । तीसरे ने गिना तब भी चार ही रहे । मामला संगीन हो गया और तब पाया कि लौटकर घर चलें - शायद पाँचवा आदमी रात को घर लौट गया हो।

रास्ते में सबके सब रोते-पीटते लौट रहे थे कि एक समझदार आदमी मिला। उसने इन्हें रोककर पूछा कि वे किस मुसीबत में हैं। इन्होंने बताया कि हम घर से पाँच चले थे पर रात भर में चार ही रह गए। उस आदमी ने इन्हें गिना तो वे पाँच थे। उसने कहा भले आदमियों, तुम घर से पाँच चले थे और पाँच ही अब हो, तो रो क्यों रहे हो?
सब इन भंगड़ियों में से एक ने फिर सबको गाना एक, दो, तीन, चार।

समझदार ने कहा- अरे भोंदू, अपने को तो गिन। अब इन लोगों की समझ में आया कि मामला यह है कि जो गिनता है, अपने को भूल जाता है। वही हाल मेरा हो रहा है कि मैंने घर की सोची, पड़ौसी की सोची, देश की सोची और यों समझो कि दुनिया बातें सोच मारी , पर अपनी बात भूल गया और कभी यह न सोचा कि आखिर मेरा मेरे प्रति क्या कर्त्तव्य है और क्या अधिकार है। आज मैं यही सोच रहा था कि तुम आ गए। कहो फिर, मैं गहरे चिंतन में था या नहीं?

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

भाई, बात तो तुम्हारी कुछ पते की सी लगती है कि हम दुनिया की बात सोचते हैं, पर अपनी नहीं, और सच बात बड़े कह गए हैं कि - आप मरे जग परलौ यानी हम मर गए तो दुनिया मर गई। हम नहीं तो जहान नहीं। बात मन को लगती है, पर अपने बारे में सोचें ही क्या?

नहीं सोचते, तो लिखाओ पशुओं में नाम, क्योंकि जो सोचता नहीं, वह पशु है - जानवर है। तो हम पशु हैं आपकी राय में ? वाह साहब, आप हमें पशु बता रहे हैं, पर भाई, यह तो बताओ कि तुम्हें हमारी पूँछ और सींग किधर दिखाई दिए हैं?

पूँछ और सींग! पशु बनने के लिए पूँछ और सींग की जरूरत नहीं पड़ती। बात यह है कि पशुता और मनुष्यता दो भाव है। जो पहले सोचे और फिर चले, वह मनुष्य और सोचे कुछ नहीं, बस जिधर हवा ले जाए, चला चले वह पशु - अब आई तुम्हारी समझ में मेरी बात ?

तो सोचना जरूरी है।

जी हाँ, सोचना जरूरी है और अपने बारे में सोचना जरूरी है। मैं यही जरूरी कार्य कर रहा था, जब तुम आए।

महाकवि शेखसादी एक दिन अपने बेटे के साथ सुबह की नमाज पढ़ कर लौट रहे थे। उनके बेटे ने देखा कि रास्ते के दोनों तरफ वाले घरों में अभी तक बहुत से आदमी सोये पड़े हैं। उसने अपने पिता से कहा , अब्बा ये लोग कितने पापी हैं कि अभी तक पड़े सो रहे हैं और नमाज पढ़ने नहीं गए।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

विचारक शेखसादी ने दुःखभरे स्वर में कहा - बेटा , बहुत अच्छा होता कि तू भी सोता रहता और नमाज पढ़ने न आता।

बेटे ने आश्चर्य से पूछा, यह आप क्या कह रहे हैं, मेरे अब्बा?
शेखसादी ने और भी गहरे में डूबकर कहा- तब तू दूसरों की बुराई खोजने के इस भयंकर पाप से तो बचा रहता, मेरे बेटे!

मतलब यह कि अपने बारे में सबसे पहले जो बात सोचने की है, वह यह कि मेरा यह अधिकार है कि मैं अच्छे काम करूँ , अपने जीवन को ऊँचा उठाऊँ , पर मेरा यह कर्त्तव्य भी है कि जो किसी कारण से अच्छे काम नहीं कर रहे हैं, या साफ शब्दों में गिरे हुए हैं , उन्हें अपने कामों से ऊँचे उठने की प्रेरणा देते हुए भी, उन पर अपने अहंकार का बोझ न लादूँ, क्योंकि अहंकार घृणा का पिता है और घृणा जीवन की संपूर्ण ऊँचाइयों की दुश्मन है।

खास बात यह है कि घृणा उसका घात करती है जो घृणा करता है और इस तरह मैं दूसरों से घृणा करके अपना ही घात करता हूँ।
तो घृणा को रोकना जरूरी है?

हाँ जी, घृणा को रोकना - उसे उत्पन्न ही न होने देना , बहुत जरूरी है, पर रोकने की बात कहकर तुमने मुझे एक पुरानी बात याद दिला दी।

मेरे एक मित्र हैं श्री कौशल जी। उन्हें अपने जीवन में पहली असफलता यह मिली कि एंट्रेंस पास न कर सके और नाइन्थ में ही उन्हें स्कूल को नमस्कार करना पड़ा।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

इनके कुछ दिन बाद ही उन्होंने छोटा-सा प्रेस खोल लिया । साझी समझदार था, कर्जा प्रेस के नाम लिखता रहा, आमदनी अपने । प्रेस फेल हो गया और मेरे मित्र चौराहे पर खड़े दिखाई दिए।

अपने पिता की पूरी पूँजी लगाकर उन्होंने बर्तनों का एक कारखाना खोल लिया। बत्तन बनते, कलई होती, रुपये छनका करते। सेठों में गिनती होने लगी पर तभी उनकी पत्नी बीमार हो गई। उसे लिए इरविन अस्पताल पड़े रहे। कारखाना मजदूर खा गए। पाँच महीने बाद लौटकर आए तो लेना कम था , देना बहुत । यहाँ भी ताला बंद किया। पन्सारी की थोक दुकान थी। मेवा के ढेर लग गए ढेरों आती, बोरियों जाती। फिर रुपया बरसने लगा, पर जाने कैसे ये घटनाएँ भी छितरा गई और पत्नी का सारा जेवर बेचकर जान छूटी।

खाली तो रह ही न सकते थे। घर से दूर जाकर होटल खोल लिया। चला , चमका और ठप्प हो गया। वहाँ से भी हटे और अपने संबंधी की सोड़ा वाटर फेक्ट्री में बैठने लगे यहाँ से एक बीमा कंपनी में गए। खूब चमके। बीमा कंपनी में डायरेक्टरों का कुछ झमेला मचा, तो इन्होंने शर्बत की दुकान खोल ली और एक अखबार निकाल दिया। दोनों खूब चले , पर चलकर टिके नहीं, चले ही गए।

अब यह एक बहुत बड़ी कंपनी के मैनेजर डायरेक्टर थे। यहाँ ये ऐसे चमके कि पिछली सब चमकें धीमी पड़ गई। एक बार तो ऐसी हवा बैंधी कि गाँठ बँध गई. फिर वे ही बहुत सी बातें इकट्ठी हुई और कंपनी में ताला पड़ा।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

मेरे मित्र अब पुस्तक प्रकाशक थे। बाजार उनकी पुस्तकों से दाया हुआ था , धूम थी। खूब रहे । देश स्वतंत्र हुआ , उन्हें एक यात्रा के बीच में एक जाति के लो उतार लिया और जाने कितने दिन बंदी रहे। जाने कैसे बचे और कहाँ-कहाँ भटकते रहे। बहुत दिन बाद एक पत्रकार के रूप में प्रकट हुए और अब शांति के साथ सम्मान की और व्यवस्था की जिंदगी बिता रहे हैं। उन्हें देखकर बराबर मेरा दिमाग चक्कर में रहता कि ये सज्जन कितने अद्भुत हैं कि इतनी असफलताओं के थपेड़े खाकर भी निराश नहीं हुए। मैं उनके बारे में बहुत सोचता, पर उनके व्यक्तित्व का रहस्य न समझ पाता।

एक दिन एक अन्य मित्र आए श्री सिंहल। उनका कारखाना भी फेल हो गया था और वे उसका मामला निपटाने में मेरा सहयोग चाहते थे उनके दो मोटरें बिकनी थीं पर पूरे दाम देने वाला कोई ग्राहक बाजार में न था। एक दिन बहुत ऊबे हुए मेरे पास आकर बोले, तो भाई साहब जितने में बिकती है, उतने में बेच दें, पर यह मामला निपटा दें।

मैंने कहा, मामला तो निपटाना ही है पर 10 हजार की गाड़ियाँ 6 हजार में कैसे बेच दें? बोले, 6 हजार में ही बेच दीजिए ?बात यह है कि यह मामला निपट जाए तो मैं फ्रेश स्टाट ले सकता हूँ।

मेरे कानों में पड़ा फ्रेश स्टार्ट - इनका अर्थ होता है - नया ताजा आरंभ । सुनते ही एक नई ताजगी अनुभव हुई और मैंने सोचा कि हर नया आरंभ अपने साथ एक ताजगी, एक तेजी, एक स्फुरण लिए आता है।

THE HINDI PAGE जानें कुछ नया www.thehindipage.com

तभी याद आ गए मुझे फिर कौशल जी, जो जीवन में बार-बार असफल होकर भी थके नहीं, ऊबे नहीं, और बराबर आगे बढ़ते रहे और आज ही पहली बार मेरी समझ में आया उनकी उस अपराजित वृत्ति का रहस्य । यह रहस्य है नया ताजा आरंभ। वे हारे , पर हार कर रुके नहीं और इस न रुकने में ही उनकी सफलता का रहस्य छिपा हुआ है।

मैंने सोचा - मेरा अपने प्रति यह अधिकार है कि मैं हार जाऊँ , थक जाऊँ, गिर भी पड़े और भूलूँ-भटकूँ भी , क्योंकि यह सब एक मनुष्य के नाते मेरे लिए स्वाभाविक है. संभव है. पर मेरा यह कर्तव्य है कि मैं हार कर भागूँ नहीं, थक कर बैठूँ नहीं, गिर कर गिरा ही न रहूँ और भूल-भटक कर भरमता ही न फिरूँ, जल्दी से जल्दी अपनी राह पर आ जाऊँ। अपने काम में लग जाऊँ और एक नया आरंभ करूँ क्योंकि रुक जाना ही मेरी मृत्यु है और मरने से पहले, न मेरा अधिकार है और न कर्तव्य ।

THE HINDI PAGE
जाने कुछ नया
www.thehindipage.com

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg